समेकित जैविक खेती

प्रशिक्षण कार्यशाला

INTEGRATED ORGANIC FARMING

(TRAINING WORKSHOP)

17–18 जून 2017

आयोजन स्थल

हरे कृष्णा ग्राम–सेवा संस्थान

गोविन्द गौशाला, प्रतापपुरा, बबेडी जंगल,

तिगौला, ओरछा, मध्य प्रदेश

आयोजक

उमेश यादव

प्रशिक्षण सहयोग

सतत कृषि ज्ञान एवं सशक्तिकरण संस्था

- अगर आपके पास गाय है तो खेत में डालने के लिए कोई खाद–कीटनाशक बाजार से कुछ भी खरीदने की जरुरत नहीं है। देशी गाय आधारित जैविक खेती करके खेती को लाभ का सौदा बनाया जा सकता है। परन्तु कैसे?
- गौशाला के लिए कहीं से कोई दान लेने की आवश्यकता नहीं है, आप अपनी गौशाला को गौ–उत्पाद का मूल्य–संवर्धन करके सक्षम बना सकते हैं। परन्तु कैसे?
- ऐसे ही आपके बहुत से प्रश्न होंगे। इन सभी प्रश्नों का इस प्रशिक्षण कार्यशाला में समाधान अवश्य प्राप्त होगा।

प्रशिक्षण के विषय

रसायनिक खेती के नुकसान

विषमुक्त खेती एवम् जैविक खेती से लाभ

जैविक खेती के मुख्य अवयव

मृदा प्रबंधन की आवश्यकता और विधियाँ

कृषि में सूक्ष्म जैव–तंत्र की भूमिका

सब्जियों की जैविक खेती

जैविक तरीके से पौध–पोषण और पौध–संरक्षण

(सैद्धांतिक प्रशिक्षण एवम् प्रयोगात्मक कार्यशाला)

जैविक खेती में फसल संवर्धन, बीज संवर्धन, बीज भण्डारण एवम् और अन्य प्रबन्धन

जैविक खेती का सर्टिफिकेशन, उत्पाद का मूल्य संवर्धन, उत्पाद की मार्केटिंग

संपर्क सूत्र

नितिन काजला	:	09634865111
शैलेश प्रताप सिंह	:	08423900111
देवप्रताप सिंह कौरव	:	08120610522
डॉ जितेन्द्र सिंह	:	09893359141

जैविक खेती की सफलता: सोलह संस्कार

संदर्भ : जैविक खेती-नई दिशाएँ : अरुण के शर्मा

1. अपना अच्छा बीज बनाकर – राख + नीम की पत्ती मिलाकर भण्डार में रखना।
2. वर्षा जल खेत में संचय हो ऐसी तकनीक लगाकर रखना।
3. भूमि को सीधी धूप व वर्षा से बचाने के लिए मल्च से ढंककर रखना।
4. गोबर को धूप से दूर इकट्ठा कर अच्छा खाद बनाकर रखना।
5. अग्निहोत्र, पंचगव्य, जीवामृत, वट्–मृदा से भूमि को जीवित रखना।
6. कुछ वृक्ष/लतायें व एक बीघा के लिये एक गाय + एक नीम रखना।
7. मिट्टी–पानी–हवा को समझकर खेती करने का ध्यान रखना।
8. प्रकृति–पडौसी–पानी–पेड़–प्राणी (मित्र) को खेती के सहायक रखना।
9. नीम–करंज–बकायान–आक–गोमूत्र कीट नियंत्रण के लिये रखना।
10. दलहनी फसल व हरी खाद को फसल चक्र में जरूर रखना।
11. साफ बीज, निराई, गुड़ाई से खरपतवार पर नियत्रंण रखना।
12. केंचुआ व मधुमक्खी को खेत में रहने का वातावरण रखना।
13. प्रतिदिन खेत में भ्रमण कर रोग–कीट–खरपतवार पर नजर व फसल से स्नहे रखना।
14. बीज उपचार, अच्छी खाद, सिंचाई, फसल चक्र समय पर बुवाई–कटाई का ध्यान रखना।
15. उत्पाद की गुणवत्ता , ग्रेडिंग व सुन्दर पैकिंग का ध्यान रखना।
16. बीज से बाजार तक, चौपाल से इंटरनेट तक, वैदिक से वर्तमान तक जानकारी रखना

तभी होगी भूमि की रखवाली व किसान की खुशहाली

सतत कृषि ज्ञान एवं सशक्तिकरण संस्था
Sustainable Agriculture Knowledge and Empowerment Trust
facebook.com/saket.organic
http://www.saket.org.in/
saketpatrika@gmail.com
+91 96348 65111
साकेत

दशपर्णी अर्क

दशपर्णी अर्क का प्रयोग सभी तरह के रस चूसक कीट और सभी इल्लियों के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- 200 लीटर पानी
- 2 किलोग्राम गाय का गोबर
- 10 लीटर गोमूत्र
- 2 किलोग्राम करंज के पत्ते
- 2 किलोग्राम सीताफल के पत्ते
- 2 किलोग्राम धतूरा के पत्ते
- 2 किलोग्राम तुलसी के पत्ते
- 2 किलोग्राम पपीता के पत्ते
- 2 किलोग्राम गेंदा के पत्ते
- 5 किलोग्राम नीम के पत्ती
- 2 किलोग्राम बेल के पत्ते
- 2 किलोग्राम कनेर के पत्ती
- 500 ग्राम तम्बाकू पीस के या काटकर
- 500 ग्राम लहसुन
- 500 ग्राम पिसी हल्दी
- 500 ग्राम तीखी हरी मिर्च
- 200 ग्राम अदरक या सोंठ

बनाने की विधि

सर्वप्रथम एक प्लास्टिक के ड्रम में 200 ली। पानी डाले फिर इसमें 2 किलोग्राम गाय का गोबर और 10 लीटर गोमूत्र मिला दें। अब इसमें नीम, करंज, सीताफल, धतूरा, बेल, तुलसी, आम, पपीता, कंजरे, गेंदा की पत्ती की चटनी डाले और डंडे से चलाएं फिर दूसरे दिन तम्बाकू, मिर्च, लहसुन, सोठ, हल्दी डाले फिर डंडे से चलाकर जालीदार कपड़े से बंद कर दें और 40 दिन छाए में रखा रहने दे, परंतु प्रतिदिन सुबह शाम डंडे से हिलाते जरुर रहें।

भण्डारण एवं अन्य सावधानियां

इसको छः माह तक प्रयोग कर सकते हैं। इस दशपर्णी अर्क को छाये में रखें। बनाते समय इसको सुबह शाम चलाना न भूले।प्रति एकड के लिए 200 ली। पानी में 10 ली। दशपर्णी अर्क मिलाकर छिड़काव करें।

साभार: साकेत कृषि मार्गदर्शिका

सतत कृषि ज्ञान एवं सशक्तिकरण संस्था
Sustainable Agriculture Knowledge and Empowerment Trust
facebook.com/saket.organic
http://www.saket.org.in/
saketpatrika@gmail.com
+91 96348 65111

अग्नी अस्त्र

अग्नी अस्त्र का उपयोग तना कीट फलों में होने वाली सूंडी एवं इल्लियों के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- 20 लीटर गोमूत्र
- 5 किलोग्राम नीम के पत्ते की चटनी
- आधा किलोग्राम तम्बाकू का पाउडर
- आधा किलोग्राम हरी तीखी मिर्च
- 500 ग्राम देशी लहसुन की चटनी

बनाने की विधि

उपयुक्त ऊपर लिखी हुई सामग्री को एक मिट्टी के बर्तन में डालें और गरम करें। चार बार उबाल आ जाने के बाद आग से उतर कर ठंडा करें। आग से उतरने के बाद 48 घंटे छाए में रखें। 48 घंटे में चार बार डंडे से चलाएं। यह 48 घंटे में तैयार हो जाएगा।

भण्डारण एवं अन्य सावधानियां

अग्नी अस्त्र का प्रयोग भण्डारण करके केवल तीन माह तक कर सकते हैं। उबालने के लिए मिट्टी के बर्तन को ही लें। गोमूत्र धातु के बर्तन में न ले न ही भंडारित करे।

उपयोग

प्रति एकड के लिए 5 ली। अग्नी अस्त्र को छानकर 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे मशीन या नीम के लेवचा से छिड़काव करें।

सतत कृषि ज्ञान एवं सशक्तिकरण संस्था
Sustainable Agriculture Knowledge and Empowerment Trust
facebook.com/saket.organic
http://www.saket.org.in/
saketpatrika@gmail.com
+91 96348 65111

ब्रम्हास्त्र

ब्रम्हास्त्र का उपयोग अन्य कीट और बड़ी सूंडी इल्लियों आदि के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- 10 लीटर गोमूत्र
- 3 किलोग्राम नीम की पत्ती
- 2 किलोग्राम करंज की पत्ती
- 2 किलोग्राम सीताफल पत्ती
- 2 किलोग्राम बेल के पत्ते
- 2 किलोग्राम अरंडी पत्ती
- 2 किलोग्राम धतूरा के पत्ते

बनाने की विधि

मिट्टी के बर्तन में गोमूत्र डालकर उसमे उपरोक्त पत्तों की चटनी कर के कोई भी पांच प्रकार की चटनी को मिला दें। अब बर्तन आग में चढ़ा कर मिश्रण को उबालें। जब चार उबाल आ जाए तो आग से उतारकर 48 घंटे छाए में ठंडा होने दें। इसके बाद कपड़े से छानकर प्रयोग करे।

भण्डारण एवं अन्य सावधानियां

ब्रह्मास्त्र का प्रयोग छः माह तक कर सकते हैं। भंडारण मिट्टी के बर्तन में करें। ब्रह्मास्त्र को छाये में रखे एवं धूप से बचाएं। गोमूत्र प्लास्टिक के बर्तन में ले या रखें।

उपयोग

प्रति एकड 200 लीटर पानी में तैयार 10 लीटर ब्रह्मास्त्र को छान कर मिलाएं और स्प्रे मशीन से छिड़काव करें।

साभार: साकेत कृषि मार्गदर्शिका

सतत कृषि ज्ञान एवं सशक्तिकरण संस्था
Sustainable Agriculture Knowledge and Empowerment Trust
facebook.com/saket.organic
http://www.saket.org.in/
saketpatrika@gmail.com
+91 96348 65111
साकेत

नीमास्त्र

नीमास्त्र का उपयोग रस चूसने वाले कीट एवं छोटी सुंडी, इल्लियों आदि के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- 5 किलोग्राम नीम पत्तियांयुक्त टहनियां
- 5 किलोग्राम नीम फलध्नीम खली
- 5 लीटर गोमूत्र
- 1 किलोग्राम गाय का गोबर

बनाने की विधि

सर्वप्रथम प्लास्टिक के बर्तन पर 5 किलोग्राम नीम की पत्तियों की चटनी, और 5 किलोग्राम नीम के फल (पीस व कूट कर) डालें एवं 5 लीटर गोमूत्र व 1 किलोग्राम गाय का गोबर डालें। इन सभी सामग्री को डंडे से चलाकर जालीदार कपड़े से ढक दें। यह 48 घंटे में तैयार हो जाएगा। 48 घंटे में चार बार डंडे से चलाएं।

भण्डारण एवं अन्य सावधानियां

नीमास्त्र का प्रयोग छः माह तक कर सकते है। नीमास्त्र को मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में भरकर छाये में रखे एवं धूप से बचाएं। गोमूत्र प्लास्टिक के बर्तन में ले या रखें।

उपयोग

प्रति एकड 200 लीटर पानी में तैयार 10 लीटर नीमास्त्र को छान कर मिलाएं और स्प्रे मशीन से छिड़काव करें।

सतत कृषि ज्ञान एवं सशक्तिकरण संस्था
Sustainable Agriculture Knowledge and Empowerment Trust
facebook.com/saket.organic
http://www.saket.org.in/
saketpatrika@gmail.com
+91 96348 65111

जीवामृत

निर्माण सामग्री (एक एकड़ हेतु)

- 10 किलोग्राम देशी गाय का गोबर
- 5 से 10 लीटर गोमूत्र
- 2 किलोग्राम गुड या फलों के गुदों की चटनी
- 2 किलोग्राम बेसन (चना, उड़द, मूंग)
- 200 लीटर पानी
- 50 ग्राम मिट्टी

बनाने की विधि

सर्वप्रथम कोई प्लास्टिक की टंकी या सीमेंट की टंकी लें फिर उस पर 200 ली। पानी डाले। पानी में 10 किलोग्राम गाय का गोबर व 5 से 10 लीटर गोमूत्र एवं 2 किलोग्राम गुड़ या फलों के गुदों की चटनी मिलाएं। इसके बाद 2 किलोग्राम बेसन, 50 ग्राम मेड़ की मिट्टी या जंगल की मिट्टी डालें और सभी को डंडे से मिलाएं। इसके बाद टंकी को जालीदार कपड़े से बंद कर दे। सुबह शाम डंडे से घोल को हिलाएं। 48 घंटे बाद जीवामृत तैयार हो जाएगा।

इस जीवामृत का प्रयोग केवल सात दिनों तक कर सकते हैं। प्लास्टिक व सीमेंट की टंकी को छाए में रखे जहां पर धूप न लगे। गोमूत्र को धातु के बर्तन में न रखें। छाए में रखा हुआ गोबर का ही प्रयोग करें।

उपयोग

प्रति एकड 200 लीटर तैयार जीवामृत सिंचाई के बहते पानी पर बून्द बून्द टपका कर दें। फसलों और पौधों पर जीवामृत का छिडकाव कर दें। छिडकाव करने से उनको उचित पोषण मिलता है और दाने/फल स्वस्थ होते हैं।

साभार: साकेत कृषि मार्गदर्शिका

सतत कृषि ज्ञान एवं सशक्तिकरण संस्था
Sustainable Agriculture Knowledge and Empowerment Trust
facebook.com/saket.organic
http://www.saket.org.in/
saketpatrika@gmail.com
+91 96348 65111

घन जीवामृत

घन जीवामृत में सूक्ष्मजीव सुषुप्त अवस्था में रहते हैं। खेत में डालने पर ये जीव सक्रिय होकर फसल को पोषक तत्व उपलब्ध करवाते हैं।

निर्माण सामग्री (एक एकड़ हेतु)

- 100 किलोग्राम गाय का गोबर
- 1 किलोग्राम गुड/फलों की चटनी
- 2 किलोग्राम बेसन (चना, उड़द, अरहर, मूंग)
- 50 ग्राम मेड़ या जंगल की मिट्टी
- 1 लीटर गौमूत्र

बनाने की विधि

सर्वप्रथम 100 किलोग्राम गाय के गोबर को किसी पक्के फर्श व पोलीथीन पर फैलाएं। एक पात्र में बाद गुड या फलों की चटनी, बेसन एवं मेड़ या जंगल की मिट्टी डालकर उसमे गौमूत्र मिलाये। घोल बनाकर घोल को गोबर के ऊपर छिडक कर फॉवड़ा से अच्छी तरह से मिला दें। इस सामग्री को 48 घंटे तक किसी छायादार स्थान पर एकत्र कर या थापीया बनाकर जूट के बोरे से ढक दें। 48 घंटे बाद उसको छाए पर सुखाकर चूर्ण बनाकर भंडारण करें। इस घन जीवामृत का भण्डारण करके 6 माह तक प्रयोग कर सकते हैं। गोबर ताजा ही लें या फिर अधिकतम सात दिन तक पुराना गोबर का प्रयोग करें। गोमूत्र किसी धातु के बर्तन में न रखें।

उपयोग

एक बार खेत जुताई के बाद घन जीवामृत का छिड़काव कर खेत तैयार करें।

साभार: साकेत कृषि मार्गदर्शिका

सतत कृषि ज्ञान एवं सशक्तिकरण संस्था
Sustainable Agriculture Knowledge and Empowerment Trust
facebook.com/saket.organic
http://www.saket.org.in/
saketpatrika@gmail.com
+91 96348 65111

बीजामृत (बीज शोधन)

बीजशोधन का अर्थ है बीजों का बीजजनित और मृदाजनित रोगों से बचाव हेतु तैयार करना। बीजशोधन से बीजों के अंकुरित होने हो क्षमता में वृद्धि हो जाती है। बीज शोधन से बीज जल्दी और ज्यादा मात्रा में उगकर आते हैं। जड़ें गति से बढ़ती हैं और भूमि से पेड़ों पर बीमारियों का प्रकोप नहीं होता है।

निर्माण सामग्री (100 किग्रा बीज हेतु)

- 5 किग्रा। गाय का गोबर
- 5 लीटर गाय का गौमूत्र
- 20 लीटर पानी
- 50 ग्राम चूना
- 50 ग्राम मेड़ की मिट्टी

बनाने की विधि

इस सभी सामग्री को किसी बडे बर्तन में डालकर एक साथ मिला दें। इस मिश्रण को चौबीस घंटे तक रखा रहने दें लेकिन दिन में दो बार लकड़ी से जरुर हिलाएं।

उपयोग

बुवाई के 24 घंटे पहले बीजशोधन करना चाहिए। बिजामृत तैयार हो जाने के बाद बीजों के जमीन में फैलाकर उसके ऊपर बिजामृत का छिडकाव करें। बीजों को छाया में सुखाएं और इसके बाद में बीज बोएं।